नये चरवाहों के प्रशिक्षण से संबंधित निर्देश

पी०टी० अध्ययनमाला आरम्भ करने में प्रशिक्षार्थी की सहायता

किस प्रकार इस अध्ययनमाला का प्रयोग किया जाए ?

कृपया पवित्रात्मा से प्रार्थना करने में कुछ क्षण व्यतीत कीजिये और सहायता मांगिये

1. **अपने अगुवे से नियमित भेंट कीजिये जो आपसे अधिक अनुभवी है।**

- अगुवा नये लीडरों को उसी प्रकार प्रशिक्षित करता है जिस प्रकार प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को प्रशिक्षित किया था, कक्षा में बैठकर नहीं पर काम करते व यात्राएं करते हुए।
- ध्यान से देखिए कि लोगों से बातें करते समय अगुवा क्या करता है। वह आप पर दृष्टि रखता है कि आप क्या करते हैं।
- अपने अगुवे की सहायता से अगले सप्ताह का कार्यक्रम बनाएं और ऐसे अध्ययन पाठों का चुनाव करें जो विश्वासियों की आवश्यकता के अनुकूल उपयुक्त हों तथा नये क्षेत्रों में प्रभु की सेवा करने में आपके सहायक हों।
- अपने अगुवे को सूचित करते रहें कि आप और आपकी कलीसिया के लोग क्या कर रहे हैं? अपनी समस्याएं और असफलताएं सच्चाई के साथ बताएं। यदि आप शर्माएंगे और सच्चाई छिपाएंगे तो अगुवा आपकी उचित सहायता नहीं कर पाएगा।
- ऐसी अध्ययन-सामग्री का चुनाव कीजिये जिससे कलीसिया के विश्वासी को उस सेवघकाई में सहायता मिल सके जिसकी उसके जीवन में अभी तक कमी है।
- आरम्भ में आप अपने अगुवे से सप्ताह में एक या दो बार भेंट कर सकते हैं, पर बाद में महिनें में एक या दो बार ही भेंट कर सकते हैं। तत्पश्चात्त आवश्यकतानुसार हर तीन या चार माह बाद भेंट कर सकते हैं।
- हमें एक दूसरे को परामर्श देना (कुलु० ३:१६) और आपस में एक दूसरे के सामने अपने पापों को मान लेना चाहिये (याकूब ५:१६)। इसका अर्थ यह है कि हम दूसरे अगुवे के परामर्श पर ध्यान देते हैं और उसके द्वारा की गई समीक्षा को स्वीकार करते हैं। हम सबको इस प्रकार के निरीक्षण की आवश्यकता है ताकि अगुवा यह सुनिश्चित कर सके कि प्रत्येक की सेवकाई बाइबल आधारित है या नहीं। यह निरीक्षण हमारी अगुवाई करने की क्षमता को विकसित करता है और लोगों पर हमारे स्वार्थपूर्ण एवं कष्टदायक नियंत्रण को दूर करता है।
- यदि कोई अगुवा प्रभु की सेवा इस रूप से करता है कि कोई उसके कार्य में हस्ताक्षेप न करे न उसे कोई परामर्श दे, तो वह अगुवा भयानक मूर्खता में है। अनेक कलीसियाओं में ऐसे अगुवे द्वारा भारी क्षति देखी गई है।

2. **अन्य अगुवों से भी नियमितरूप से भेंट कीजियेः**

- अपने क्षेत्र के अन्य अगुवों से भेंट कीजिये। प्रत्येक अगुवे को सूचना देते रहना चाहिये कि उसके जन क्या कार्य कर रहे हैं। उन्हें आपकी सेवकाई की जांच करने दीजिये और आप भी उनकी सेवकाई की जांच कीजिये।

- मुखिया को एक दूसरे की सेवकाई एवं आत्मिक उन्नति का मूल्यांकन व जांच करते रहना व एक दूसरे का सुधार करते रहना चाहिये। नया-नियम हमें इस प्रकार एक दूसरे की सहायता करने की आज्ञा देता है - एक दूसरे को सुधारें, एक दूसरे को क्षमा करें, एक दूसरे के सामने अपने अपराध स्वीकार करें, एक दूसरे का भार उठाएं, इसके अतिरिक्त और भी अनेकों आज्ञाएं "एक-दूसरे" से संबंधित नये नियम में पाई जाती हैं।
- एक दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य बने रहिये। यदि कोई अपराध में पकड़ा जाता है तो प्रेमपूर्वक उसे समझाएं और उसे सुधारें, पवित्रात्मा इस प्रकार से आत्मिक उन्नति में हमारी सहायता करता है।

3. अन्य नये नेताओं को सिखाएं व आदर्श अगुवा बनाएं :

- जहां तक संभव हो अन्य नये चरवाहों को आदर्श अगुवा बनाना आरम्भ करना चाहिये। इन अगुवों में से कुछ सेवक ऐसे हो सकते हैं जो आपकी कलीसियाई सेवकाई में सहायक चरवाहे के रूप में, डींकन के रूप में, या आराधना-संचालक के रूप में, आपकी सहायता कर सकेंगे तथा कुछ नई कलीसियाएं आरम्भ करके अथवा अन्य कलीसियाओं के साथ मिलकर सेवा करने वाले बन सकेंगे।
- वे क्या कर रहे हैं और उनकी क्या योजनाएं हैं, इस विषय में उनसे बात करें।
- उनके लोगों की तत्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार पाठ चुनने में उनकी सहायता कीजिये।
- जब तक उन्हें आवश्यक हो तब तक उनकी इसी प्रकार सहायता कीजिये, नये नियम की शिक्षा है कि जब तक वे दूसरों को सिखाने के योग्य न बनें उन्हें सिखाते रहें (२ तीमु० २:२)। आपको नये चरवाहों को नियुक्त भी करना चाहिये जैसाकि संत पौलुस ने तीतुस को आदेश दिया था कि वह नियुक्त करे।
- नये चरवाहों का चरित्र तीतुस १:५-६ के अनुसार होना चाहिये। सबसे पहले उनको निर्दोष होना चाहिये। फिर उन्हें दूसरों को सिखाने में निपुण होना चाहिये अर्थात् सिखाने का कार्य उन्हें अपने परिवार ही से आरम्भ करने को कहना चाहिये। यदि वे इस कार्य को अच्छी तरह कर पाएंगे तो वे कलीसिया की भी अच्छी तरह रखवाली कर पाएंगे।
- जब आप संतुष्ट हो जाएं कि वे कार्य कर सकते हैं, तो नये सेवक नियुक्त करें और उन्हें सिखाएं। १ तीमुथियुस ३:१-७ में लिखा है कि नये विश्वासी को नियुक्त न किया जाए। पौलुस ने नहीं बताया कि कितने समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिये, इसका कारण यह हो सकता है कि कुछ विश्वासी तीन सप्ताहों की शिक्षा के उपरान्त ही अन्यों की अपेक्षा विश्वास में परिपक्व हो जाते हैं, जो तीस वर्ष तक शिक्षा पाने के बाद भी नहीं हो पाते। गलतिया में कुछ ही समय की सेवकाई के बाद स्वयं संत पौलुस ने ऐसे लोगों को नियुक्त किया था जिन्होंने थोड़े ही सप्ताह तक शिक्षा पाई थी (प्रेरि० १४)। अंताकिया जैसी परिपक्व कलीसिया ने पौलुस और बरनाबास को प्रचार-कार्य के लिये नियुक्त करने में एक वर्ष तक प्रतीक्षा की थी। (प्रेरि० ११:२५-२६, १३:१-३)।
- दूसरों को सिखाने के संबंध में उन निर्देशों को पढ़ें जो दूसरों को प्रशिक्षित करने के संबंध में दिये गये हैं।

4. **ऐसे पाठों व गतिविधियों का चुनाव करें जो आपके लोगों की रूचि व तत्कालिक आवश्यकता के अनुरूप हों।**

(यदि आपके पास विषय-सूचि न हो तो अपने संयोजक से प्राप्त कर सकते हैं)

- प्रार्थना के साथ विषय-सूचि में से ऐसे पाठों का चुनाव कीजिये जो आपके लोगों की तत्कालिक आवश्यकता को पूरा करते हों तथा दूसरों की सेवा के अधिक अवसर प्रदान करते हों। विषय-सूचि को पहली ही बार के अध्ययन के आधार पर आरम्भ कदापि न करें।
- प्रभु से प्रार्थना करें कि वह मार्गदर्शन करे कि कौन सा अध्ययन आपके लोगों के लिये प्रत्येक सप्ताह उचित रहेगा। नई कलीसियों की, जो आत्मिक रीति से नए जन्में हुए बालकों के समान हैं, अपनी आवश्यकताएं हो सकतीं हैं जिन्हें आपको पूरा करना है। परिपक्वता के पथ पर कोई भी दो कलीसियाएं एक समान नहीं चल सकतीं हैं।

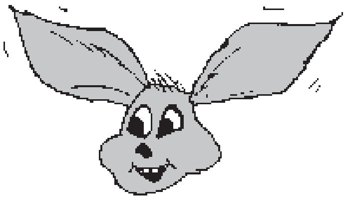

बुद्विमान चरवाहा अपनी भेड़ों का शब्द ध्यानपूर्वक व कान खोलकर सुनता है।

- अपने लोगों की आवश्यकताओं एवं सुअवसरों को पहचानने के लिये ध्यानपूर्वक उनकी बात सुनें।
- प्रत्येक सेवकाई क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न बातों की अध्ययन-सामग्री दी गई है, ध्यानपूर्वक चुनाव करे।
- प्रत्येक पाठ में चरवाहों व बच्चों से संबंधित एक समान अध्ययन सामग्री दी गई है। इससे उन्हें विषय के अनुसार पहले से ही बाइबल-कथा तैयार करने में सहायता मिलेगी और वे सीख भी सकेंगे। आराधना सभा में बाइबल-कथा के अनुसार नाटक भी प्रस्तुत किया जा सकता है।
- जो पाठ चरवाहों से संबंधित हैं उन पर शब्द चरवाहा लिख दिया गया है, और अन्त में a लिखा है।
- बच्चों से संबंधित पाठों में ऊपर 'बच्चों के लिये' लिख दिया गया है तथा अन्त में b लिख दिया गया है।
- कुछ पाठों में अतिरिक्त अध्ययन सामग्री दी गई है।
- नये चरवाहों से संबंधित प्रत्येक पठन-सामग्री में बहुत सी गतिविधियां दी गई हैं, उन सबको करना आवश्यक नहीं है।

5. **किसी भी पढ़ाने व नेतृत्व की गतिविधि से पूर्व आवश्यक है कि आप पूरी तरह तैयारी करें :**

- स्वयं को तथा अपने लोगों को अनुशासित करें व समय से एक सप्ताह पहले अच्छी तरह तैयार करें।
- आराधना सभा के अगुवे को कहें कि वह बच्चों के शिक्षकों के सहयोग से बच्चों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली गतिविधियों को अच्छी तरह तैयार कर ले। साथ ही उससे विषय के अनुसार गीतों का चुनाव करने को कहें।
- क्या आपकी कलीसिया में कम सदस्य हैं व झुण्ड छोटा है? छोटी कलीसियाओं में विशेष तैयारी करने के संबंध में शैतान बहुधा परीक्षा में डाल देता है कि अगुवा तैयारी न करे।

निम्नलिखित चार कारणों से बड़ी कलीसियाओं की अपेक्षा इन छोटी कलीसियाओं में समय से पूर्व अधिक तैयारी करने की आवश्यकता हैः–

१–छोटी कलीसियाओं की विशेषता यह होती है कि इनमें प्रत्येक सदस्य विभिन्न रूप से भाग लेता है, जो नए नियम के अनुसार है। विश्वभर में बड़ी कलीसियाओं की अपेक्षा इन छोटी कलीसियाओं में अधिक लोग प्रभु के समीप आते और सेवा करते हैं। इसलिये यदि हमने अच्छी तरह समय से पहले सहायकों को तैयार नहीं किया तो हम इन लोगों की हिस्सेदारी खो बैठेंगे सारे आवश्यक कार्य स्वयं एक ही अगुवे को करने पड़ेंगे और यह ऐसा अपराध होगा जो पवित्रात्मा को खेदित करेगा। परिणामस्वरूप जिस कलीसिया की रखवाली प्रभु ने हमें सौंपी है वह अपाहिज हो जाएगी।

२–बड़ी कलीसियाओं की भांति इन छोटी कलीसियाओं के सदस्यों की भी कुछ आत्मिक आवश्यकताएं होती हैं जिनकी पूर्ति के लिये प्रार्थनापूर्वक तैयारी करना आवश्यक है।

३–बड़ी कलीसियाओं में बहुधा अच्छे पढ़े–लिखे और अनुभवी पास्टर होते हैं जो पूर्ण –कालिक सेवा करते हैं, उनके पास समय होता है और योग्यता भी होती है कि आराधना–सभा के एक दिन पहले विभिन्न प्रकार की तैयारियां कर सकें। फिर भी छोटी कलीसियाएं उनकी अपेक्षा तेज़ी से बढ़ती हैं और अक्सर उनमें स्वेच्छा से सेवा करने वाले चरवाहे होते हैं जो अधिक पढ़े–लिखे व अनुभवी नहीं होते। यदि ऐसे सेवक आराधना–समय से एक दिन पहले तैयारी करने की प्रतीक्षा करेंगे तो वह तैयारी प्रभावशाली न होगी और इस प्रकार प्रभु की आशीषें रूकेंगी।

४–पवित्रात्मा न केवल आराधना सभा में ही पर साथ ही प्रार्थनापूर्वक योजना बनाते समय व सहायकों के साथ तैयारी करते समय भी प्रभावशालीरूप से कार्य करता है। इन सब लोगों द्वारा की गई तैयारी को पौलुस और प्रभु यीशु की तरह परमेश्वर नये अगुवों को तैयार करने के लिये प्रयुक्त करता है।

6. अपने झुण्ड के नेतृत्व के लिये दूसरों के साथ मिलकर सेवा कीजियेः

- समझदार अगुवा अकेले ही सेवा नहीं करता। यीशु व उनके शिष्यों ने भी अकेले ही सेवा कभी नहीं की थी। अपने झुण्ड की रखवाली के लिये अन्य सेवकों को तैयार करें ताकि वे भी आपके साथ आराधना में सहयोग कर सकें। कुछ लोगों को आप डींकन के रूप में नियुक्त कर सकते हैं जो सप्ताह के दौरान लोगों की विशेष आवश्यकता के लिये सेवा कर सकते हैं।
- यदि आप किसी जन को आराधना में अगुवाई करने के लिये नियुक्त करते हैं, तो उसे परामर्श दीजिये कि वह इस अध्ययनमाला में उपलब्ध इससे संबंधित निर्देशों व परामर्शो का अध्ययन करे। Aoe
- बच्चों के शिक्षकों को प्रति सप्ताह इससे संबंधित अध्ययन–सामग्री की प्रतिलिपियां उपलब्ध कराईए।

7. नये चरवाहों से संबंधित प्रत्येक पाठ को तीन भागों में विभक्त कीजियेः

- ये तीन भाग इस प्रकार हैं :–

१–अपने हृदय और मष्तिष्क को परमेश्वर के वचन के द्वारा तैयार करें।

२–अगले सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनाएं।

३–अगामी आराधना–सभा की योजना बनाएं।

- भाग १– हृदय व मष्तिष्क को परमेश्वर के वचन से तैयार करना :

  इससे पहले कि आप आराधना–सभा में इन पाठों को पढ़ाएं, प्रत्येक पी०टी० पाठ्यक्रम को एक या दो सप्ताह पहले से पढ़ना आरम्भ कर दें क्योंकि पाठ समझने में समय लगता है। प्रार्थना करते रहें और विचार करें कि किस प्रकार आप लोगों के जीवनों पर शिक्षा को लागू कर सकते हैं और तब सप्ताह के दौरान उससे संबंधित कोई गतिविधि भी कीजिये।

- भाग–२ः अगले सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनाना :

  आराधना–सभा से कुछ दिन पहले, अपने सहयोगियों से मिलें और योजना बनाएं कि अगामी सप्ताह में आराधना के बाद आपको क्या क्या कार्य करने चाहिये। प्रत्येक पाठ में कुछ कार्य करने के सुझाव दिये गये हैं जो आप कर सकते हैं। यदि आपके मष्तिष्क में है कि परमेश्वर आपके लोगों से क्या कराना चाहता है, तो उसके अनुसार आराधना व शिक्षण की अच्छी तैयारी करने में कठिनाई नहीं होगी।

- भाग–३ः अगामी आराधना समय की तैयारीः

  आपके सहयोगियों को चाहिये कि वे आराधना–सभा व शिक्षण कार्य की योजना बनाने में आपकी सहायता करें। समय काफी दिन पहले आराधना निर्धारित कीजिये ताकि उसमें भाग लेने वाले प्रार्थी प्रार्थना पूर्वक अच्छी तैयारी कर सकें। जो लोग नाटक या कविता आदि प्रस्तुत करने के इच्छुक हों उन्हें अभ्यास करने का अवसर प्रदान कीजिये। यदि ऐसा संभव न हो पाए तो कम से कम वे लोग जो आराधना में अगुवाई करते हैं वे आराधना आरम्भ होने के एक घण्टा पहले आपस में मिलें ताकि योजना बना सकें और प्रार्थना कर सकें। ऐसी योजना बनाएं कि प्रत्येक विश्वासी स्वतन्त्रतापूर्वक हिस्सा ले, और ऐसा प्रतीत न हो कि कुछ ही लोगों के हाथ में आराधना का संचालन है।

8. आराधना–सभा की गतिविधियों में बच्चों को सम्मिलित कीजियेः

- आराधना में बच्चों को सम्मिलित करने के लिये, बच्चों के शिक्षकों के साथ मिलकर कार्यक्रम बनाएं। आराधना में बच्चे क्या कुछ कर सकते हैं इसके बारे में अनेकों सुझाव व बाइबल कथाएं जिन्हें नाटक का रूप दिया जा सकता है, इस अध्ययनमाला में प्रस्तुत हैं जिनका उपयोग आराधना सभा के मध्य किया जा सकता है। जहां तक संभव हो बच्चों और युवाओं को मिलकर कार्य करने दीजिये।
- आस–पड़ौस के बच्चे जो विश्वासी नहीं है और न ही चर्च आते हैं, उनके माता–पिता से आग्रह कीजिये कि वे नाटक आदि में हिस्सा लेने व सहायत करने के लिये अपने बच्चे भेजें। उन्हें महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व न दें, संभव है वे आ न पाएं। ऐसे बच्चे आमतौर पर मसीह के समीप आ जाते हैं।

9. एक दूसरे को परामर्श देने व प्रार्थना करने के लिये छोटे समूहों का गठन कीजियेः

- कुछ ऐसी बातें जो परमेश्वर हमसे कराना चाहता है वे छोटे समूहों में पूरी हो जाती हैं। परमेश्वर हमसे एक दूसरे की सेवा विभिन्न प्रकार से कराना चाहता है, जैसे :

  एक दूसरे को परामर्श देने के द्वारा : रोमियों १५:१४

  एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के द्वारा : इब्रानियों १०:२५, कुलुस्सियों ३:१६

  एक दूसरे को समझाने के द्वारा : इब्रानियों ३:१३

प्रेम और भले कामों में एक दूसरे को उत्साहित करने के द्वारा : इब्रानियों १०:२४

एक दूसरे की उन्नति का कारण बनने, शान्ति देने, सुधारने के द्वारा : १ थिस्सलुनीकियों ४:१८, ५:११

एक दूसरे के सामने अपराधों को मानने के द्वारा : याकूब ५:१६

एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने के द्वारा : याकूब ५:१६

जब हम छोटे समूहों में एक दूसरे की सेवा करते हैं तो परमेश्वर का पवित्र आत्मा बड़ी अद्‌भुद रीति से कार्य करता है

10. **परमेश्वर के वचन की शिक्षा दीजिये तथा छोटे समूहों के हित में आराधना सभा का आयोजन कीजियेः**

- संत पौलुस प्रत्येक विश्वासी से अपेक्षा रखते हैं कि आराधना के समय इस प्रकार जमा होना चाहिये, "जब तुम आराधना के लिये इकट्ठे होते हो तब हर एक के हृदय में भजन, उपदेश, अन्य भाषा, प्रकाश, या अन्यभाषा का अर्थ बताना रहता है।" १ कुरिन्थियों १४:२६
- समझदार चरवाहा छोटे समूहों में पारंपरिक पुलपिट-प्रचार नहीं करता बल्कि इस प्रकार से सिखाता है कि लोग प्रचार के दौरान उससे सवाल भी करें और जवाब भी पाएं, और पूछें कि किस प्रकार उस सच्चाई को जो उन्होंने सीखी है, अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।
- पी०टी० अध्ययनमाला में विचार-विमर्श के लिये प्रश्न, कविताएं, कहानियां और नाटक आदि दिए गये हैं ताकि शिक्षा का कार्य और अधिक प्रभावकारी बन सके। जो कहानियां दी गई हैं उन्हें सरलता से याद किया जा सकता है ताकि आपके सदस्य दूसरों तक प्रभु का वचन पहुंचा सकें।
- आराधना के समय कुर्सियों को गोलाई में रखिए ताकि लोग एक दूसरे का चेहरा देख सकें और बिना कठिनाई के आपस में बात कर सकें।
- पी०टी० अध्ययनमाला में लिखित प्रत्येक ऐच्छिक गतिविधि का पालन करने का प्रयत्न न कीजिये। उन्हीं गतिविधियों को चुनिए जो आपके लोगों के हित में हों, तथा उनकी संस्कृति के अनुसार उचित हों।

11. **प्रभु-भोज का नियमितरूप से पालन कीजिये :**

- नये चरवाहों से संबंधित प्रत्येक पाठ में प्रभु-भोज के विषय में विभिन्न बाइबल-पाठ की विधियॉं दी गई हैं।
- कुछ कलीसियाएं प्रभु-भोज विधि के लिये केवल १ कुरिन्थियों ११ अध्याय प्रयुक्त करती हैं। इस बाइबल पाठ को विशेष अवसरों पर ही प्रयुक्त करना चाहिये क्योंकि इसमें प्रभु भोज विधि से संबंधित महत्वपूर्ण निर्देश पाए जाते हैं, अतः यदि इस पाठ को हर बार प्रयोग में लाया गया तो लोगों की दृष्टि में प्रभु यीशु के बलिदान के संबंध में जो प्रेरणादायक शिक्षा इसमें पाई जाती उसका महत्व कम होने की संभावना है।

12. लोगों को अपने बारे में सूचना देनी चाहिये कि आराधना द्वारा परमेश्वर उनके जीवनों में क्या कार्य कर रहा हैः

- क्या किसी को परमेश्वर ने चंगाई दी है? क्या विश्वासियों ने अपनी बुरी आदतों पर विजय पाई है? क्या लोग ख्रीस्त के चरणों में आए हैं? क्या कोई नई कलीसिया स्थापित हुई है? क्या किसी नई सेवकाई का उद्घाटन हुआ है? परमेश्वर क्या कार्य कर रहा है, लोगों को इसकी सूचना देनी चाहिये, और इसके लिये प्रभु की स्तुति करना चाहिये।
- लोग क्या कर रहे हैं, इस बात का स्मरण करना उन्हें सेवारत रहने के लिये प्रोत्साहित करता है। इससे दूसरों को भी परीश्रम करने का व प्रार्थना करने का प्रोत्साहन मिलता है।

13. आराधना के मध्य तथा सप्ताह के बीच, किसी विशेषकार्य को करने की योजना बनाएंः

- आराधना में उस कार्य-योजना की सूचना दे देनी चाहिये जो आपके सहयोगियों ने बनाई है।
- अगले सप्ताह के दौरान प्रभु की सेवा से संबंधित लोगों के विचार आमंत्रित कीजिये।
- जिन लोगों को प्रभु ने निम्नलिखित वरदानों में से कोई वरदान दिया है, तो सेवकाई के इच्छुक लोगों को अवसर दीजिये :-

सुसमाचार सुनाने का वरदान-दूसरों को यीशु के विषय में बताना, लूका २४:४६-४८

सेवा करने का वरदान - उनकी सेवा करना जिन्हें आवश्यकता है - गलतियों ५:१३

देखभाल करने का वरदान - अपने परिवार में प्रभु के वचनों को लागू करना - इफिसियों ५:२१-३३, ६:१-४

बुद्धिमानी का वरदान - समाज में परमेश्वर का प्रभाव बढ़ाना - मत्ती ५:१३-१४

तरस का वरदान - आवश्यकताग्रस्तों की सेवा करना - मत्ती २५:३१-४६

प्रोत्साहित करने का वरदान - दूसरों को सांत्वना व शान्ति देना - १ थिस्सलुनीकीयों ५:११

चंगाई देने का वरदान - बीमारों के लिये व दुष्टात्माग्रस्तों के लिये प्रार्थना करना - याकूब ५:१३-१६

अगुवाई करने का वरदान - अन्य कलीसियाओं के साथ सहयोग करना - प्रेरितों के काम १५:४१

दान देने का वरदान - सेवकाई के लिये धन सहयोग उपलब्ध कराना -१ कुरिन्थियों ८:१-४

14. महिलाओं व बच्चों को सेवा के अवसर प्रदान करनाः

- परमेश्वर ने जो वरदान महिलाओं को दिए हैं उन्हें उनका प्रयोग करना चाहिये। कुछ सामाजिक संस्कृतियों में पुरूष अपनी महिलाओं को पढ़ाने व सिखाने की अनुमति नहीं देते हैं, और अन्य कुछ संस्कृतियों में भक्त महिलाओं को पुरूषों को पढ़ाने की भी अनुमति होती है जैसे प्रिस्किल्ला ने अपुल्लौस को शिक्षा दी थी (प्रेरि० १८:२६)। किन्तु सभी सांस्कृतियों में एक महिला अपने से छोटी महिला को शिक्षा दे सकती है। तीतुस २:३-५
- प्रोत्साहित कीजिये कि आयु में बड़े बच्चे अपने से छोटे बच्चों को अनुशासित करें। इससे दोनों ही के विकास में सहायता मिलेगी।
- जो महिलाएं सप्ताह के मध्य घरों पर जाकर भेंट करती हैं, या डींकन हैं, उन्हें इस पाठ्यक्रम में उपलब्ध जानकारी से लाभ उठाना चाहिये। AOd

15. **जब आप नये चरवाहों से संबंधित पाठ्यक्रम समाप्त कर लेते हैं तो अतिरिक्त अध्ययन सामग्री का अध्ययन कीजियेः**

- नये चरवाहों से संबंधित पाठ्यक्रम सरल व संक्षिप्त तो है पर यह कार्य करने के लिये आपकी नींव दृढ़ कर देता है। यदि आप इसकी बातों पर उचित ध्यान नहीं देंगे तो बाद में आपकी सेवकाई पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।
- यदि आप इस पाठ्यक्रम में सीखी गई बातों से अधिक जानकारी चाहते हैं तो अतिरिक्त अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।